शोध पत्र- संगीत

भारतीय संगीत का स्वर्णयुग: मध्यकाल

* डॉ. नित्यप्रिया श्रीवास्तव

* डी. फिल, संगीत प्रवीण, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

मध्यकाल सांगीतिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है । इसी समय हमारे देश पर मुसलमानों का आक्रमण हुआ इसी कारण भारतीय संगीत पर इनका गहरा प्रभाव पड़ा चूकी आक्रमण के कारण आम जनता का जीवन कुछ अस्त–व्यस्त सा हो गया। यहाँ तक की इसका प्रभाव इतना गहरा पड़ा की इस आक्रमण ने भारतीय संगीत की जड़े हिला कर रख दी। यद्यपि इस काल में मुगलों का आक्रमण हुआ और बहुत से उतार चढ़ाव साहित्यिक दृष्टिकोण से भी देखने को मिलता है किन्तु फिर भी इस काल में बहुत से ऐसे शासक हुए जिन्होंने संगीत को केवल मनोरंजन मात्र न समझ कर इन्हें यथोचित सम्मान भी दिया । इस काल का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ 'गीत गोविन्दम' माना जाता है –12वीं शताब्दी में लिखा हुआ यह प्रसिद्ध ग्रन्थ है जयदेव कृत है। इस ग्रन्थ के 12 सर्ग हैं जिनमें 28 गीत हैं और सभी में 8–8 के पद हैं। गीत–गोविन्द में राधाकृष्ण के लीलाओं का वर्णन है। इस ग्रन्थ में शृंगार रस एवं संगीत से परिपूर्ण है।

इसी काल में रचित पं0 शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर एक प्रसिद्ध एवं महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ की मान्यता उत्तर भारतीय संगीत तथा दक्षिण भारतीय संगीत दोनो ही ओर है। बड़े से बड़ा संगीतज्ञ इस ग्रन्थ को आधार मानकर अपनी रचना करते हैं। इस ग्रन्थ के टीकाकार हैं सिंह भूपाल तथा दूसरे हैं कल्लिनाथ।

संगीत रत्नाकर में पं0 शारंगदेव ने सात अध्यायों में अपने अन्य को विभाजित किया है–

1–स्वराध्याय 5– तालाध्याय
2–नादाध्याय 6– वाद्याध्याय
3–राम विकेकाध्याय 7–नर्तनाध्याय
4–प्राकीर्णाध्याय

7 स्वरों, 63 अलंकार, ग्राम, मूच्छना, तान प्रकरण, जाति प्रकरण, गीति प्रकरण इत्यादि का विवेचन इस ग्रन्थ में किया गया है।

vykmíhu f[kyth d: le; e: lxhr dh fLFkfr&

अलाउद्दीन एक अत्यधिक महत्वाकांक्षी तथा संगीतप्रिय शासक था। इन्होंने सन् 1296–1316 ई0 में अपने शासन की बागडोर अपने हाथ में ली। इन्हीं के काल में 'अमीर खुसरो' नामक संगीतज्ञ हुआ करते थे। जो कि भारतीय संगीत को उच्च अवस्था में लाने के लिए कई वाद्य, गायन शैलियाँ तथा तालों की उत्पत्ति की जैसे– तराना, गजलख्नक्श चतुरंग शैलियाँ, तालों में झूमरा, आड़ा, चारताल, सूलताल, खमसा इत्यादि वाद्यों में सितार, तबला इत्यादि। संगीत की दृष्टि से यह काल समृद्ध रहा है। इसके अलावा अमीर खुसरो कई रागों की भी रचना की है जैसे– साजगिरी सहाना, जिल्फ बरारी तोड़ी, सर्पर्दाजिला, तोड़ी–असावरी, इत्यादि।

jft;k lYrkuk&

''तेरहवीं शताब्दी में गुलाम वंश के द्वितीय सुलतान अल्तमश की पुत्री रजिया सुलताना को संगीत से बड़ा प्रेम था। वह विद्वानो तथा संगीतज्ञों का आदर करती थी। उनके दरबार में श्रेष्ठ संगीतज्ञ रहा करते थ।[1]

राग तरंगिणी भी इसी काल में (१५वीं शताब्दी) में लोचन कवि द्वारा लिखा गया। इनके इस ग्रन्थ में संगीत से सम्बन्धित अनेक पक्ष पर इनके विचार उपलब्ध है जैसे– राग रागिनी वर्गीकरण के स्थान पर थाट राग वर्गीकरण, निषद्धगान व अनिबद्ध गान, बारह स्वरों का वर्णन 7 शुद्ध स्वर पाँच विकृत स्वर, स्वर श्रुति विभाजन इत्यादि।इन्होंने अपना शुद्ध थाट जिसे माना है वह आज कल के काफी थाट के समान है। इनका यह ग्रन्थ संगीतोपयोगी ग्रन्थ है।

राजा मानसिंह तोमर य1486 ई0. 1516 ई0द्ध की संगीत के प्रति अत्यधिक रूचि थी। ''इन्होंने कुछ नये राग भी बनाये जिनका नाम अपनी प्रिय पत्नी (गूर्जरी रानी (मृगनयनी) के नाम पर रखे जैसे– गुर्जरी,भाल गूर्जरी, मंगलगूर्जरी, इत्यादि। उन्होंने 'मान कुतूहल' नामक संगीत पुस्तक भी लिखी। उनके दरबार में प्रसिद्ध गायक बख्शू थे जिनका नाम तानसेन के बाद दूसरे नम्बर पर आज दिन तक अमर है।[2]

ckn'kkg ckcj&

इस काल में भजन इत्यादि का भी प्रचार–प्रसार खूब हुआ और बाबर इसका भी सम्मान करता था। इस काल में संगीत की स्थिति उच्च अवस्था में पहुँच चुकी थी।

''बाबर स्वयं एक कुशल गायक था एवं संगीतज्ञों के प्रति के प्रति उसकी आन्तरिक सहानुभूति थी। अपनी मौलिक सूझबूझ से वो गायकों को समयानुकूल सुझाव भी देता था। जब उसने भारत पर आक्रमण किया तो अपने साथ संगीतज्ञों को भी लाया था।[3]

gqek;w¡ dk dky–

यह संगीत को केवल मनोरंजन ही नहीं अपितु साधना व ईश्वर प्राप्ति का मार्ग भी मानता था। इन्होंने अपने शासन काल में बहुत से संतो एवं भक्ति गायकों को स्थान दिया। हुमायूँ संगीत के इतने प्रेमी थे कि युद्ध से लौटने के बाद संगीत

सुनते थे। हुमायूँ ने तो अपने अन्तकाल में संगीत का दामन नहीं छोड़ा। यह समय संगीत के दृष्टि से अत्यधिक विकसित था।

vdcj ¼1556&1605½&

अकबर, हुमायूँ के मृत्यु के पश्चात मात्र 13 वर्ष की अल्प आयु में गद्दी पर बैठा। अकबर ने पूरे भारत पर राज्य किया वह एक प्रतापी शासक था। ''हुमायूँ की अपूर्व कला लालसा को उसके पुत्र अकबर ने पूरा किया उसने कला को धर्म के साथ समन्वित करके भारतीय जनजीवन में नये आदर्श की स्थापना की।[4] बाबर और हुमायूँ की तरह अकबर भी संगीत का प्रेमी शासक था। इन्हीं के दरबार में नौरत्न थे जिनमें ''तानसेन'' प्रमुख थे।

अकबर अपने दरबार में संगीतज्ञों को बहुत सम्मान देते थे। ये स्वयं भी बहुत विद्वान थे तथा संगीत की बारीकियों को समझते थे। इनके प्रमुख दरबारी गायक तानसेन थे जो एक महान संगीतज्ञ (संगीत सम्राट) थे। अकबर ने तानसेन के रियाज के लिए अलग से व्यवस्था की थी। और जब तानसेन रियाज करते थे तो कोई उन्हें उनके अभ्यास के दौरान बाधा नहीं पहुँचा सकता था।

तानसेन के बचपन का नाम 'तन्ना' था। ये बचपन से ही संगीत के प्रति रूचि रखते थे इनके गुरू का नाम ''स्वामी हरिदास'' था। इन्होंने ही तानसेन को संगीत विद्या का ज्ञान दिया। तानसेन कई रागों की रचना की। 'मियाँ सारंग, मियाँ की तोड़ी, दरबारी कान्हवा इत्यादि। अकबर का काल संगीत की दृष्टि से स्वर्णकाल कहा जाता है। इनके काल में 'बैजू बावरा'' नामक प्रसिद्ध गायक थे। इनके अलावा, मीराबाई जो कि कृष्णभक्त और गायिका भी थी। रामदास नामक एक अन्य संगीतज्ञ थे। इस काल में संगीत की स्थिति इतनी उच्च थी कि यह स्वर्णिम समय माना जाता था। इस समय बहुत से प्रसिद्ध विद्वान हुए जिन्होंने संगीत एवं साहित्य को एक नया आयाम दिया।

इसी समय भक्त कवि तुलसीदास जी का भी वर्णन मिलता है। ''तुलसीदास का युग संगीत का स्वर्ण काल है। इन्होंने अपनी गीति कृतियों में इक्कीस राग–रागनियों का समावेश किया है। ''कृष्ण गीतावली'' में ये दस राग है। भसावरी, कान्हणा, केदार, गौरी, धनाश्री, नट, विलावल मल्हार, ललित तथा सोरठ' गीतावली में इक्कीस रागों की चर्चा की गई है।'' तुलसीदास ने अपने महाकाव्य में संगीत के पक्ष का ध्यान दिया। इस प्रकार कहा जा सकता है इन्हें संगीत के विभिन्न पक्ष की जानकारी थी।तुलसीदास के अलावा इस काल में 'कबीर' जी के पद मिलते हैं जिनमें कई रागों का वर्णन मिलता है। कबीरदास ने अपने साखियों, पदों के माध्यम से समाज में फैली कुरीतियों को हटाया।

अकबर के ही काल में 'पुण्डरीक विठ्ठल' नामक संगीत के विद्वान हुए जिन्होंने चार संगीत की पुस्तक लिखे– (1) सद्राग चन्द्रोदय (2) रागमंजरी (3) रागमाला (4) नर्तन निर्णय। इन पुस्तकों में संगीत कबारे में जानकारी उपलब्ध है। अकबर काल वास्तविक रूप से संगीतमय काल था।

tgk¡xhj&

जहाँगीर(1605–1627) भी अकबर की तरह संगीत का बहुत सम्मान करते थे। ये स्वयं भी संगीत की अच्छी जानकारी रखते थे। उने दरबार में सदैव ही संगीत की चर्चा–परिचर्चा हुआ करती थी। इसके अलावा गायन–वादन, नृत्य का आयोजन हुआ करता था। इनके दरबार में जहाँगीर दाद, परवेजदाद, मक्खू व हमजान इत्यादि प्रसिद्ध संगीतज्ञ हुआ करते थे।

''जहाँगीर के समय में ही दक्षिण भारत के पं0 सोमनाथ ने दक्षिण संगीत पद्धति पराग विबोध नामक एक पुस्तक 1610 ई0 में लिखी गयी। जहाँगीर के समय में पं0 दामोदर मिश्र ने हिन्दुस्तानी संगीत पर 'संगीत–दर्पण' नामक पुस्तक 1625 ई0 में लिखी।[5]

''जहाँगीर के सम्बन्ध में उल्लेख प्राप्त होता है'' उसकी साहित्य, कविता, भवन निर्माण, संगीत, चित्रकला जैसी कलाओं में बड़ी अभिरूचि थी।[6]

'kkgtgk&

''शाहजहाँ का कला प्रेम भी विख्यात है। शाहजहाँ ने ''ताजमहल'' का निर्माण कराया था। शाहजहाँ को साहित्य तथा ललित कलाओं से खूब प्रेम था। संगीत चित्रकला तथा स्थापत्य कला के विद्वान उससे आदर पाते थे और पुरस्कृत होते थे।[7] इस समय भी संगीतज्ञों ने नवीन रागों का निर्माण लिया। इरानी संगीत को भी सम्मिलित किया भारतीय संगीत के साथ जो कि संगीत में सौन्दर्य वृद्धि का कारण बना।

''उसके दरबार में प्रसिद्ध गायक जगन्नाथ, को 'कविराज' की उपाधि और लाल खाँ को 'गुण–समुद्र' की उपाधि मिली थी। जगन्नाथ और दिरंगखाँ दोनो ही चाँदी से तौले गये थे और प्रत्येक को साढ़े चार हजार रूपये पुरस्कार स्वरूप दिए गए।[8]

औरंगजेब य1658–1707 ई0द्धरू मुगलकाल में सभी संगीत के प्रेमी शासक हुए किन्तु औरंगजेब को संगीत से घृणा थी वह वो संगीत को हेय दृष्टि से देखता था। इसका कारण यह है कि औरंगजेब को भारतीय संगीत का धार्मिक पक्ष सुनने को नहीं मिला। औरंगजेब के समय तक आते–आते संगीत का पतन शुरू हो चुका था उसने जिस संगीत को सुना वह विलासिता से परिपूर्ण था जो औरंगजेब को कतई सुनने में अच्छा नहीं लगता था। ''संगीत सदृश्य कलाओं के प्रति अपनी वितृष्णा व घृणा का परिचय देकर औरंगजेब ने साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनरू वाली उक्ति को सार्थक कर दिया।[9] लेकिन औरंगजेब को संगीत के प्रति इस अरूचि का कारण संगीत में व्याप्त विलासिता थी। क्योंकि औरंगजेब भी धार्मिक व्यक्ति था। किन्तु उसे परमात्मा से जोड़ने वाले संगीत सुनने को नहीं मिला।

''औरंगजेब के समय जिस घर से भी संगीत या वाद्य की ध्वनि सुनाई देती थी वहाँ ही राज्याधिकारी पहुँच कर संगीत के वाद्यों को नष्ट कर देते थे।[10] इस काल में भले ही इतने कड़े नियम संगीतज्ञों के प्रति थे कि गा–बजा नहीं सकते थे किन्तु इसी काल में बहुत से ग्रन्थ भी लिखे गये। जो भारतीय संगीत के शास्त्रीय

पक्ष को मजबूती प्रदान करती है। ''औरंगजेब के शासन काल मे प्रसिद्ध विद्वान '' अहोबल पंडित ''(1650 ई0) ने '' संगीत पारिजात'' नामक ग्रन्थ की रचना की। इन्होंने अपनी पुस्तक में 19 स्वरों की चर्चा की ही जिनमें शुद्ध व विकृत दोनो प्रकार के स्वर हैं। ''काफी'' ठाठ को शुद्ध ठाठ माना है। इन्होंने 122 रागों की चर्चा की है। पं0 अहोबल ने वीणा के तारों पर स्वरों की स्थापना भी की है। श्रुतियों पर स्वरों की स्थापना इस ग्रन्थ में उपलब्ध है। यह ग्रन्थ पूर्णतया संगीत पर आधारित एवं संगीत के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है।[11]

i;0 0;dVe[kh ¼1690 b0½&

दक्षिण भारत के प्रसिद्ध संगीतज्ञ थे। इन्होंने 'चतुर्दडिप्रकाशिका' नामक ग्रन्थ की रचना की इन्होंने 12 स्वरों से 72 थाटो की रचना की 72 थाटो से 19 थाटों का प्रचलन है यह ग्रन्थ उत्तर व दक्षिण भारतीय संगीत दोनों के लिए महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। सत्रहवीं शताब्दी में हृदय नारायण देव की 1660 ई0 में दो पुस्तकें मिलती हैं (1) हृदयप्रकाश (2) हृदयकौतुक इस काल में भावभट्ट जी की तीन पुस्तकें प्राप्त हैं। (1) अनूप संगीत विलास (2) अनूप संगीत रत्नाकर (3) अनुपांकुश

मुगल सल्तनत के अन्तिम राजा थे 'मुहम्मदशाह रंगीले जिनके दरबार में संगीतज्ञों की बहुसंख्या थी। इनके दरबार में संगीत की बहुत कद्र थी। इनके दरबार 'अदारंग' व 'सदारंग' नामक दो सुप्रसिद्ध गायक हुए जिन्होंने अनेको ध्रुपद व ख्यालों की रचना की। उमराव खाँ, मेठोबाई और खुशालखाँ, भी इस काल के उत्तम संगीतज्ञ थे।[12]

fu"d"kZ%

यह कहा जा सकता है कि मध्यकाल में यद्यपि सांगीतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत से उतार चढ़ाव आये जिससे हमारे सभ्यता एवं संस्कृति को अवश्य ही क्षति पहुंची किन्तु यह कहना भी अतिशयोक्ति न होगा की यह काल सांगीतिक दृष्टिकोण से बहुत समृद्ध रहा क्योंकि जहां अलाउद्दीन खिलजी , बाबर ,हुमायु ,अकबर ,जहाँगीर ,शाहजहाँ के शाशन काल में संगीत के प्रदर्शन को पल्लवित होने का अवसर मिला वहीँ दूसरी और औरंगजेब के शासनकाल में बहुत से संगीतोपयोगी प्रसिद्ध ग्रंथों की रचना हुई । इस कारण इस काल को संगीत का स्वर्णयुग कहा जा सकता है ।

संदर्भ ग्रंथ

1. भारतीय संगीत का इतिहास – पृ0 73–74
2. भारतीय संगीत का इतिहास– स्वाति शर्मा, पृ0 223
3. भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन, डॉ0 अरूण कुमार सेन पृ0 26
4. भारतीय संस्कृति और कला, वाचस्पति गैराला, –पृ0 551
5. भारतीय संगीत का इतिहास (मूलतत्व एवं सिद्धान्त) डॉ0 स्वाति शर्मा– पृ0 228
6. भारतीय संगीत का इतिहास , भगवत शरण शर्मा, पृ0 68
7. भारतीय संगीत का इतिहास , भगवत शरण शर्मा, पृ0 81
8. भारतीय संगीत का इतिहास– स्वाति शर्मा, पृ0 228–229
9. भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन, डॉ0 अरूण कुमारसेन, पृ0 35
10. भारतीय इतिहास में संगीत – भगवत शरण शर्मा –85
11. संगीत का योगदान मानव जीवन के विकास में– डॉ0 उमाशंकर शर्मा– पृ0 96
12. भारतीय संगीत का इतिहास, डॉ0 स्वाती शर्मा, पृ0 231